प्रार्थना

दीनबन्धो! कृपासिन्धो! कृपाबिन्दु हो प्रभो।
उस कृपा की बूँद से फिर बुद्धि ऐसी हो प्रभो।।
वृत्तियाँ द्रुतगामिनी हों जा समावें नाथ में।
नीद-नद जैसे समाते हैं सभी जलनाथ में।।
जिस तरह देखूँ उधर ही दरस हो श्री राम का।
आँख भी मूदूँ तो दीखे मुख-कमल घनश्याम का।।
आप में आ मिलूँ प्रभु। यह मुझे वरदान दो।
मिलती तरंग समुद्र में जैसे मुझे भी स्थान दो।।
छूट जावें दुःख सारे, क्षुद्र सीमा दूर हो।
द्वैत की दुविधा मिटे आनन्द में भरपूर हो।।
आनन्द सीमा-रहित हो, आनन्द पूर्णानन्द हो।
आनन्द सत्-आनन्द हो, आनन्द चित्-आनन्द हो।।
आनन्द का आनन्द हो, आनन्द ही आनन्द हो।
आनन्द का आनन्द हो, आनन्द में आनन्द हो।।